महारानी लक्ष्मीबाई का बलिदान

शब्दार्थ : –

न्यौछावर – सब कुछ समर्पित कर देना

वीरांगना – बहादुर महिला

संदेश – समाचार , खबर

ऐशो–आराम – भोग– विलास , सुख–भोग

दुर्भाग्य – बद–किस्मत , बुरा भाग्य

अंगरक्षक – व्यक्ति की रक्षा करने वाला

निरंतर – लगातार

शोभायमान – शोभा देता हुआ , सुन्दर

क) प्रथम स्वतंत्रता –संग्राम सन 1857 को हुआ था |

ख) रानी लक्ष्मीबाई ने ताँत्या टोपे द्वारा सैनिकों को यह संदेशा भिजवाया था कि – 'वीरों ! यह राग–रंग का समय नहीं है | शत्रु भयंकर और साधन –संपन्न है | हमें उससे स्वराज्य प्राप्त करना है | अतः प्राणों को हथेली पर रखकर और सिर पर कफ़न बाँधकर जीवन के अंतिम क्षण तक लड़ना होगा |

ग) अपने पुत्र की रक्षा के लिए रानी ने सैनिक रामचंद्र को समझाया – ' हो सकता है , मैं युद्ध करते –करते मारी जाऊँ | ऐसी दशा में तुम मेरे पुत्र दामोदर को अपनी पीठ

पर बाँधकर दक्षिण में ले जाना | देखना , मेरे मरने के बाद भी स्वराज्य की लड़ाई समाप्त नहीं होनी चाहिए |

घ) दुर्भाग्य से ग्वालियर के राजा व सेना अंग्रेजों से जा मिली | रानी को जिस सिंधिया से स्वतंत्रता के युद्ध में सहायता पाने की उम्मीद थी , उसने सेना समेत अंग्रेज़ो के सामने घुटने टेक दिए |

ड) जनरल ह्यूरोज़ एक अंग्रेज़ था | युद्ध में रानी के शौर्य को देखकर जनरल ह्यूरोज़ दंग रह गया | महारानी के अंगरक्षक उसे बचाने का प्रयास करने लगे , पर वह तो शत्रु –सेना में घुसती ही जा रही थी |

च) शत्रुओं द्वारा युद्ध – भूमि में फिरंगियों ने रानी को घेर लिया था , फिर भी रानी लक्ष्मीबाई घबराई नहीं | अपनी तलवार से शत्रुओं को धराशायी करने लगी | शत्रु ने भी उस वीरांगना की वीरता को देखकर दाँतो तले उँगली दबा ली थी |

छ)' **झाँसी की रानी** ' नामक कविता कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान ने महारानी लक्ष्मीबाई की वीरता पर लिखी थी |

ज) रानी लक्ष्मीबाई की समाधि उसी स्थान पर बनी हुई है , जहाँ उनकी चिता जली थी |